पब्लिक स्कूल केवल नाम के ही

PAPER APPEARED IN DESHBANDHU, A DAILY NEWSPAPER OF M.P., ON 31ST AUGUST,1993

डॉ. ए. के. पाण्डे. पन्ना

अपने देश में शिक्षा देने के लिये कई प्रकार के स्कूल हैं जैसे सरकारी स्कूल, अर्धसरकारी स्कूल, गैर सरकारी स्कूल, सहायता प्राप्त स्कूल, मान्यता प्राप्त स्कूल, वे स्कूल जो सहायता नहीं लेते तथा पब्लिक स्कूल इस प्रकार के विशेष स्कूल होते है जहां जनसाधारण के बालक शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ रहते हैं। ये संस्थायें केवल धनाढ्य अभिभवको के बालको के लिये हैं। तकनीकी रूप से केवल उन्हीं स्कूलों को पब्लिक स्कूल कान्फ्रेस के सदस्य है । भारत के पहले पब्लिक स्कूल की स्थापना श्री एस.आर. दास ने देहरादून में दून स्कूल के नाम से 1928 में की ।

पब्लिक स्कूल, प्रायः उन बालकों के लिए होते हैं जो दिन रात स्कूल में ही रहते हैं। उनका विकास छात्रावास में एक वार्डन की देख रेख में होता है । मूल विचार यह होता है कि बालकों में इकटठे रहकर खाना खाकर पढकर एकता की भावना उत्पन्न होती है । इन स्कूलों के बालक प्रायः समाज के ऊॅचें वर्ग के लोगों के होते है । इन स्कूलों में सहगामी कार्यो और सांस्कृतिक क्रियाओं पर भी बल दिया जाता है जिससे बालको का सर्वागीण विकास होता है । इन स्कूलो की शिक्षण प्रक्रिया उतम होती है क्योकि इन स्कूलों में धन की कमी नहीं रहती । बालक के बौद्धिक शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक पक्षों के विकास पर बल दिया जाता है ।

अच्छी शिक्षा हमारा आदर्श है और जो स्कूल अच्छी शिक्षा प्रदान करता है उनकी हमेशा आवश्यकता रहती है परन्तु क्या लोकतंत्रा में ऐसे स्कूल होने चाहिए जो केवल धनाढय अभिभावको के बालको को प्रवेश दे । इसका उतर हां या ना दोनो ही हो सकता है। लोकतत्रा को शिक्षित और उच्च कोटि के नागरिको की आवश्यकता पडती है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्राों में नेतृत्व करते हैं । परन्तु लोकतंत्रा का एक सिद्धांत यह भी है कि शिक्षा का सभी नागरिकों के लिए समान अवसर होना चाहिये अर्थात पब्लिक स्कूल सब के लिए खुले होनेचाहिए । निर्धन

परन्तु बुद्धिमान बबालको के लिए भी इनमें जगह होनी चाहिए । कोई भी संस्था जो धन के आधार पर भेदभाव करती है लोकतंत्रा में उसका स्थान नहीं है ।

केवल नाम के पब्लिक स्कूल हर शहर में सैकडों की संख्या में है । ये पब्लिक स्कूल के सिद्धांतों पर आधारित नहीं है । वास्तव में ये शैक्षिक दुकानें हैं । जिनको पब्लिक स्कूल का केवल नाम दिया गया है । आज की आवश्यकता के अनुसार ये शैक्षिक, दुकाने खूब चल रही है और आगे भी चलेगीं क्योंकि हम आम भारतीयों के लिये आज भी अंग्रेंज हमारे लिए दूसरे लोक के वासी है और उनकी भाषा अंग्रेजी ही हमारे लिए पूज्य है ।

तंग गलियों में चलने वाले ये नाम के पब्लिक स्कूल सिर्फ हमारे गुलामी के द्योतक नहीं है बल्कि हमारी भरी हुई मानसिकताके प्रतीक है जिसे हम चाहकर भी बंद नहीं कर पा रहे हैं ।